बबूल और धान की खेती

धान के साथ बबूल की खेती व्यावसायिक दृष्टि से एक उत्तम एवं अधिक लाभ देने वाली खेती है। बबूल एक बहुउपयोगी वृक्ष हैं जो कि नाईट्रोजन स्थिरीकरण लेग्यूमिनस फसल है और यह धान के साथ उगाई जा सकती है। धान के लिये लाल-पीली, लाल-चिकनी मिट्टी, पहाड़ी-लाल और लाल-काली मिश्रित मिट्टी उपयुक्त होती है। मिट्टी या मृदा का पी.एच. 5.0 से 8.5 होना चाहिए ताकि अच्छी पैदावार हो सके।

नर्सरी में बूबल की पौध तैयार करनेकी विधि :

नर्सरी में पौधे तैयार करने के लिये रेत, मृदा, गोबर की खाद को क्रमशः 1:1:2 के अनुपात में मिलाकर मिश्रण तैयार कर पॉलीथीन बैग में भरना चाहिये। बबूल बीज को 5 प्रतिशत सल्फ्यूरिक एसिड में 15 मिनट तक भिगोकर उपचारित करना चाहिए। बीजों को बोने से पहले 0.1 प्रतिशत अग्रोसन या सिरेसन के धोल में बारह घंटे भिगोकर उपचारित कर लेना चाहिए। पौधों को माह मार्च में नर्सरी में तैयार करने की कार्यवाही शुरु करना चाहिए जिससे वर्षा ऋतु तक पौधे तैयार हो जायें।

बबूल के पौधों का धान के खेत में रोपण :

बबूल के पौधों को खेत की जुताई के पश्चात् तथा धान के रोपण के पहले लगाया जाता है। मृदा की जुताई उपरान्त गोबर की खाद आवश्यकतानुसार 10-25 टन प्रति हेक्टर की मात्रा में डालें। बरसात के पहले, खेत में बबूल के पौधे 5मी. x 5मी- के अंतराल पर (400 पौधे प्रति हेक्टेयर) 45 x 45 x 45 से.मी. के गढ्ढों में लगाना चाहिए। छठवें साल में आधे पौधे (200 पौधे प्रति हेक्टेयर) बराबर अंतराल पर काटना चाहिये। इसी प्रकार आठवें साल में शेष पौधों में पुनः आधे पौधे (100 पौधे प्रति हेक्टेयर) बराबर अंतराल पर काटना चाहिए।

बबूल की प्रजातियाँ :

बबूल की दो किस्में - तेलिया और रामकांटा के साथ प्रयोग किया गया है। तेलिया बबूल ज्यादा फायदेमंद हैं क्योंकि इससे जलाऊ लकड़ी का ज्यादा मात्रा प्राप्त होती है। साथ ही इससे पशुओं के लिए चारा तथा फल्लियों की मात्रा भी ज्यादा प्राप्त होती है। रामकांटा का पेड़ कम छाया वाला तथा सीधे तने का होता है जो धान की फसल को छाया से कम प्रभावित करता है।

धान को रोपा पद्धति से बोने के लिये 50-70 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। कम अवधि की किस्म जैसे - जे.आर. 75 और जे. आर. - 353 ज्यादा उपयुक्त पायी गई हैं। धान के रोप तैयार करने के लिए मानसून के 2-3 सप्ताह पहले नर्सरी में धान की बोआई करनी चाहिए।

सिंचाई प्रबंधन

खेत में पेड़ बनाकर पानी भरने से घास एवं खरपतवार की मात्रा काफी कम हो जाती है। क्योंकि खेत में 2.5-5.0 सेमी. पानी हमेशा रहेगा, इसलिये बबूल के पेड़ के इर्द-गिर्द मिट्टी ऊँची होनी चाहिये ताकि बबूल के पेड़ पानी से सुरक्षित रहें। यद्यपि बबूल का पेड़ सामान्यतः जल प्लावन का प्रतिरोधी है।

बबूल वृक्ष – जड़ एवं छत्र प्रबंधन :

जैसे -जैसे बबूल वृक्ष की आयु बढ़े, ग्रीष्म ऋतु में इसकी जड़ तथा छत्र (कैनापी) की कटाई-छटाई करना चाहिये जिससे ईंधन हेतु लकड़ी एवं पशुचारा प्राप्त होगा तथा खरीफ मौसम में धान की फसल छाया से बचेगी। बबूल के साथ धान की खेती से धान की उपज 3.0 टन प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त की जा सकती है।

उर्वरक प्रबंधन :

खाद का प्रयोग धान तथा बबूल दोनों के लिये फायदेमंद है। पहले साल में आवश्यकतानुसार 10-25 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद का उपयोग अधिक फायदेमंद है। बाद के वर्षों में बबूल की गिरी हुई पत्तियाँ खाद का कार्य करती है। जिंक सल्फेट के 0.2 प्रतिशत धोल का पत्तियों पर छिड़काव लाभदायक रहता है। सुपर फास्फेट 60 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर तथा 80-100 कि.ग्रा. यूरिया खरीफ मौसम में देना चाहिए। यूरिया खाद का छिड़काव तीन चरणों में करने से उत्तम फसल प्राप्त की जा सकती हैं। प्रथम छिड़काव जुताई के समय, द्वितीय छिड़काव बीज बुआई या रोपण से पहले एवं तृतीय छिड़काव 40 दिन के अंतराल पर करना चाहिए।

कम बारिश वाले क्षेत्रों के लिये बबूल और धान की खेती उत्तम है। बबूल वृक्ष न केवल खेत की उत्पादकता को बनाये रखता है, बल्कि बढ़ाता भी है। बबूल वृक्ष से तीसरे वर्ष से ही लकड़ी (कृषिकार्य हेतु), चारा, ईंधन, गोंद आदि की प्राप्ति होने लगती है जिसका उपयोग स्वयं के लिए अथवा बेचने के लिए किया जा सकता है।

सम्पर्क सूत्र :- अन्य तकनीकी जानकारी के लिए उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, डाकघर – आर.एफ.आर.सी. मण्ड़ला रोड़, जबलपुर के कृषि वानिकी प्रभाग अथवा विस्तार प्रभाग से सम्पर्क कर सकते है। दूरभाष क्र. 5044004, 5044007

Printed by : **Ajit Enterprises,** Nodra Bridge, JBP